दिल मोमिन का अर्स है, जो देखे अर्स मोमिन।
हक चाहें बैठाया अर्स में, तो तेरे आगे ही नहीं ए तन।। २२ ।।

मोमिनों का दिल अर्श है, इसलिए मोमिन ही अर्श को देखते हैं। श्री राजजी महाराज परमधाम में जब बिठाना चाहें, तो संसार के यह तन पहले ही समाप्त हो जाएंगे।

महामत कहे ए मोमिनों, हकें हांसी करी पूरन।
देख खावंद या खेल को, ए कुंजी तेरा दिल मोमिन।। २३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने हम पर पूरी हंसी की है। वह तुम्हारे दिल में बैठे हैं और तारतम ज्ञान की कुंजी भी तुम्हें दी है। अब तुम चाहे संसार को देखो, चाहे श्री राजजी को देखो।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ५८० ।।

हुकम की पेहेचान

ताला द्वार न कुंजी खोलना, समझाए दई सबों आप।
दिल अपने में हक बसें, ज्यों जाने त्यों कर मिलाप।। १ ।।

न कोई ताला है, न दरवाजा, न कुन्जी है, न खोलना है। यह बातें, हे मेरी रूह! श्री राजजी ने तुम्हें सब समझा दी हैं। अब अपने दिल में राजजी बैठे हैं। जैसा चाहो उनसे मिलो।

सेहेरग से नजीक, आड़ा पट न द्वार।
खोली आंखें समझ कीं, देखती न देखे भरतार।। २ ।।

श्री राजजी महाराज अब सेहेरग से नजदीक हैं। अब न कोई परदा है, न कोई दरवाजा है। तुम्हारी आत्मदृष्टि भी खोल दी है। फिर भी तू धनी को देखते हुए भी नहीं देखती है।

हुकम इलम खेल एकै, और कोई न कहूं दम।
इत रूह न कोई रूहन की, जो कछू होए सो हुकम।। ३ ।।

यह हुकम और इलम का ही एक खेल है। और यहां कुछ नहीं है। यहां परमधाम की कोई रूहें भी नहीं है। यहां जो कुछ भी है हुकम ही है।

अपनी सुरतें हुकम, खेलावत हुकम।
खेलत सामी हुकमें, ए देखावत तले कदम।। ४ ।।

अपनी सुरता हुकम से ही है। हुकम ही खेल खिला रहा है। हुकम से ही खेलते हैं। हुकम से पता चलता है कि परमधाम में चरणों तले बैठे हैं।

अरवाहें जो कोई अर्स की, सो सब हक आमर।
हम हुज्जत लई सिर अर्स की, बैठी आगूं हक नजर।। ५ ।।

परमधाम की जो भी रूहें हैं, वह सब राजजी के हुकम से ही है, जो हमारे नाम का दावा लिए हुए हैं। हम तो परमधाम में श्री राजजी के चरणों तले सामने बैठी हैं।

Nijanand App

अरवा हमारी आमर, गुन अंग इंद्री आमर।
हम देखें सब आमर, खेल देखावत पट कर।।६।।

हमारी रूह, गुण, अंग, इंद्रियां सब हुकम से हैं। हम जो यह सब देखते हैं वह सब हुकम ही है। बीच में जो परदा डालकर खेल दिखा रहे हैं, वह भी हुकम ही है।

जो इत अरवा होए अर्स की, तो उड़ावे चौदे तबक।
रूहें नाम धराए हम, ऐसा हुकमें कर दिया हक।।७।।

यहां यदि परमधाम की रूहें हों, तो चौदह तबकों का ब्रह्माण्ड ही उड़ जाए। श्री राजजी महाराज के हुकम ने ही हम रूहों के नाम रख दिये हैं।

झूठ न आवे अर्स में, सांच नजरों रहे न झूठ।
देख्या अंतर मांहें बाहेर, कछू जरा न हुकमें छूट।।८।।

परमधाम में झूठ नहीं आ सकता और हमारी नजर के सामने झूठ ठहर नहीं सकता। मैंने अन्दर बाहर सब तरफ से देखा। यहां हुकम के बिना कुछ भी नहीं है।

देख्या देखाया हुकमें, और हम भी भए हुकम।
ना हुआ ना है ना होएगा, बिना हुकम खसम।।९।।

हुकम ने ही देखा और हुकम ने ही दिखाया। हम भी जो यहां हैं सब हुकम के अधीन हैं। श्री राजजी महाराज के हुकम के बिना यहां न कुछ हुआ है, न होता है और न कभी होगा।

हुकमें देखाया हुकम को, तिन हुकमें देख्या हुकम।
भिस्त दोजख उन हुकमें, आखिर सुख सब दम।।१०।।

हुकम ने हुकम को दिखाया। हुकम ने हुकम को देखा। वक्त आखिरत को बहिश्त, दोजख तथा कायमी के सुख हुकम से ही मिलेंगे।

जिन नाम धराया हुकमें, रूहें फरिस्ते सिर पर।
पोहोंचे अपनी निसबतें, द्वार बका खोल कर।।११।।

हुकम ने ही ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि के नाम रखे हैं। हुकम के द्वारा ही दरवाजे खोलकर अपने-अपने घर जाएंगे।

हम उठ बैठे अर्स में, हमको हुकमें दिया सब याद।
हुकमें हुकम खेल देखाया, सो हुकमें हुकम आया स्वाद।।१२।।

हम परमधाम में जब उठकर बैठ जाएंगे तो हुकम से ही हम सबको खेल की याद आएगी। हुकम ने हुकम को खेल दिखाया। हुकम से ही हुकम को खेल का स्वाद मिला।

यों मिहीं बातें कई हुकम की, हुआ हुकम सबमें एक।
अर्स में हम सिर ले उठे, सब सिर ले कहे विवेक।।१३।।

यह हुकम की बारीक बातें हैं। सबमें एक श्री राजजी का हुकम ही है। हम परमधाम में जागृत होकर उठेंगे तो विचारकर खेल की सब बातें करेंगे।

Nijanand App

हम जुदे न हुए अर्स से, और जुदे हुए बेसक।
हम रूहें खेल देख्या नहीं, और खेल की बातें करी मुतलक।। १४ ।।

हम परमधाम से अलग नहीं हुए और निश्चित रूप से अलग भी हुए हैं। हम रूहों ने खेल देखा नहीं है, परन्तु निश्चित रूप से खेल की बातें करेंगे।

इन विध सब हुकमें कर, खेल देखाया खिलवत अंदर।
बातें खिलवत की करीं खेलमें, जो गुझ हक के दिल भीतर।। १५ ।।

हुकम ने इस तरह से खेल में मूल-मिलावे के अन्दर की सब बातें बताईं, जिनको हमने खेल में जाहिर किया। यहां तक कि श्री राजजी महाराज के दिल की छिपी बातें भी जाहिर कर दीं।

और खेल की बातें सब, होसी बीच खिलवत।
लेसी खेलका सुख खिलवत में, लिया खेलमें सुख निसबत।। १६ ।।

अब खेल की सभी बातें परमधाम के मूल-मिलावा में होंगी। परमधाम में खेल के सुख लेंगे। ठीक उसी तरह से, जैसे परमधाम की निसबत के सुख खेल में लिए।

छोड़्या नहीं अर्स को, और खेलमें भी गैयां।
अन्तराए भी हुई अर्स से, और जुदियां भी न भैयां।। १७ ।।

हमने परमधाम छोड़ा नहीं और खेल में भी आए। वियोग भी परमधाम से हुआ और अलग भी नहीं हुए।

ए विध सब हुकम की, हुकमें किए बनाए।
वास्ते इस्क रब्द के, दोऊ ठौर दिए देखाए।। १८ ।।

इस तरह से यह सारी कारीगरी हुकम की है जो हुकम ने बना रखी है। इश्क रब्द (विवाद) के वास्ते ही श्री राजजी महाराज ने ही हमें संसार तथा परमधाम दोनों दिखाए।

और साहेबी अपनी, देखाई नीके कर।
क्यों कहूं बड़ाई हक की, मेरा खसम बड़ा कादर।। १९ ।।

हमें अपनी साहेबी भी अच्छी तरह से दिखाई। मेरे पति (धनी) इतने समर्थ हैं कि मैं उनकी बड़ाई कैसे करूं?

महामत कहे ए मोमिनों, हकें बैठाए तले कदम।
करसी हांसी बीच अर्स के, जो करी हुकमें इलम।। २० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने अपने चरणों के तले बिठा रखा है। अब हुकम और इलम ने जो हकीकत हमारी बना रखी है, उसकी हंसी परमधाम में होगी।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ६०० ।।

।। प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन ।।

।। प्रकरण ।। ४८४ ।। चौपाई ।। १६९७६ ।।

।। सिन्धी सम्पूर्ण ।।

Nijanand App